‘‘माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा एवं विद्यालय वातावरण का अध्ययन’’

आई0 आई0 एम0 टी0 विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0)
की
‘डॉक्टर ऑफ फिलॉसॉफी’
की उपाधि हेतु
प्रस्तुत
शोध प्रबंध की संक्षिप्त रूपरेखा

शोध निर्देशिका
डॉ० नीता गौड़
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
आई0आई0एम0टी0विश्वविद्यालय,
मेरठ

शोधार्थी
अशोक कुमार

शिक्षा विभाग
आई0आई0एम0टी0, विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0)

प्रस्तावना :—

स्कूल उस समाज का लघु रूप है जहां देश का भविष्य निर्मित होता है। स्कूल बच्चों के समाजीकरण की प्रक्रिया की मुख्य सामाजिक एजेंसी है। कुशल नेतृत्व एक सफल शैक्षणिक संस्थान का मुख्य घटक है। स्कूल की पूर्णता और सुधार मुख्य रूप से प्रिंसिपल के प्रशासनिक व्यवहार पर निर्भर करता है, क्योंकि वह पूरे शैक्षणिक संस्थान का प्रमुख है। किसी संस्था की सफलता और वृद्धि संस्था के प्रमुख द्वारा प्रकट नेतृत्व, प्रबंधन और प्रशासनिक व्यवहार की विशेषताओं और क्षमता पर आधारित होती है। स्कूल के उत्थान के लिए प्रिंसिपल की इच्छा के बिना, स्कूल में कोई भी बदलाव संभव नहीं है।

संस्था के लक्ष्यों को महसूस करने तक हेडमास्टर जवाबदेह है। उनका रवैया, व्यक्तित्व और प्रशासनिक व्यवहार की प्रकृति शैक्षिक माहौल पर निर्भर करेगी। इसलिए, प्रिंसिपल का प्रशासनिक व्यवहार स्कूल के माहौल से बहुत हद तक जुड़ा हुआ है। व्यवस्थापक संस्था की योजना, आयोजन, संचार और निर्णय लेने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। इसलिए, स्कूल के वातावरण के अनुकूल और प्रभावी विकास के लिए प्रिंसिपल का प्रशासनिक व्यवहार अध्ययन का एक महत्वपूर्ण घटक है।

कई आंतरिक और बाहरी घटक एक शिक्षक को प्रभावित करते हैं, जो बदले में शिक्षण प्रक्रिया पर प्रभाव डालता है। शिक्षक और छात्र, शिक्षक और प्रिंसिपल और अन्य स्टाफ सदस्यों के बीच पारस्परिक संबंध शिक्षण—सीखने की प्रक्रिया में बहुत प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं। स्कूल उन लोगों के बीच संचार और बातचीत का एक केंद्र है जो नियमित रूप से एक साथ काम करते हैं। स्कूल की यह संवादात्मक वातावरण एक संगठनात्मक वातावरण की ओर ले जाती है। यह वातावरण, प्राचार्य के प्रशासनिक व्यवहार से काफी हद तक प्रभावित है। सकारात्मक संस्थागत वातावरण को सफल विद्यालयों की नींव और छात्रों की शैक्षणिक सफलता का एक मजबूत भविष्यवक्ता माना जाता है। कई अध्ययनों ने इस तथ्य का पुरजोर समर्थन किया है कि प्रिंसिपल का प्रशासनिक व्यवहार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से स्कूल की वातावरण को प्रभावित करता है।

प्रशासनिक संगठन में निर्णय लेने की प्रक्रिया के अध्ययन को प्रशासनिक व्यवहार के रूप में भी जाना जाता है। यह एक संगठन के विकास और विकास की नींव रखता है। स्कूल प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार में भिन्नताएं भी संस्था की वातावरण को प्रभावित करती हैं। स्कूल प्रधानाचार्यों के नियोजन, आयोजन, संचार और निर्णय लेने का व्यवहार संस्था के संगठनात्मक माहौल को निर्धारित करेगा।

किसी संस्थान की सफलता उसके कर्मचारियों की प्रेरणा के स्तर पर निर्भर करती है। संस्थागत प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक शिक्षक के लिए एक सुखद कार्य वातावरण बनाने में एक

संतुलित भूमिका निभा रहा है। संगठनात्मक वातावरण प्रभावी संस्थानों का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह शिक्षकों को काम करने की प्रेरणा और उनके काम के प्रति समर्पण को प्रभावित करता है। शिक्षकों पर संगठनात्मक वातावरण के प्रभाव को समझने के लिए शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा एवं विद्यालय वातावरण का अध्ययन जरूरी है। शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा, संस्थानों को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। शिक्षकों की अपने कार्य प्रदर्शन में सुधार लाने के लिए प्रेरित करने के लिए प्रशासकों की भूमिका एक सकारात्मक स्कूल के माहौल को बढ़ा रही है।

संगठनात्मक वातावरण ने एक ऐसी भूमिका निभाई है जो एक संस्थान में उच्च क्षमता के व्यक्तियों को पूर्ण समर्पण पूर्ण समर्पण का भाव बना रही है। प्रेरणा लोगों को कार्रवाई के लिए प्रेरित करने और एक वांछित कार्य प्राप्त करने की प्रक्रिया है और स्वस्थ संगठनात्मक वातावरण एक व्यक्ति द्वारा व्यक्त वाहक से संबंधित लक्ष्य या विकल्प है।

संगठनात्मक वातावरण बहुत प्रेरक पहलुओं से जुड़ा हुआ है। पुरुष अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए काम करते हैं और वे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने कार्य जीवन की आकांक्षा या अपेक्षा करते हैं। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए अग्रणी सामाजिक परिवर्तन लाने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अभिप्रेरणा वह प्रक्रिया या तरीका है जिसके माध्यम से हम शिक्षा संस्थानों के उपयुक्त और अच्छे संगठनात्मक वातावरण से प्राप्त करते हैं। एक संस्थान में स्वस्थ संगठनात्मक वातावरण और शिक्षकों के पास उच्च प्रेरणा होनी चाहिए। किसी भी शैक्षिक योजना को सफल होने के लिए, कार्यक्रम के पूर्ण कार्यान्वयन को देखने के लिए प्रेरक शिक्षक का होना आवश्यक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कोई भी शैक्षणिक प्रणाली अपने शिक्षकों से ऊपर नहीं उठ सकती है। प्रेरणा एक अग्रणी बल है जो संगठन को संगठनात्मक लक्ष्यों को साझा करने के लिए या उन्हें सामना करने के लिए, कौशल को बनाए रखने और बढ़ने या निरपेक्ष बनने के लिए य रहने या छोड़ने के लिए काम करती है । कार्य प्रेरणा का उद्देश्य सकारात्मक तरीके से उन्हें प्रोत्साहित और प्रभावित करके कर्मचारी मनोबल को बढ़ावा देना है। जब कर्मचारियों का मनोबल ऊंचा होता है, तो वे अपने कार्य को अधिक कुशलता से करते हैं। धारणा की सटीकता के संदर्भ में संगठनात्मक वातावरण का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। यदि यह व्यक्ति को संदर्भित करता है, तो कथित संगठनात्मक वातावरण नौकरी संतुष्टि या कर्मचारी दृष्टिकोण के लिए बस एक अलग नाम हो सकता है।

प्रस्तुत भोध इन्हीं सब कारणों से संबंधित है जिसका मुख्य उद्दे य माध्यामिक स्तर के विघालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार, शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा एवं विद्यालय वातावरण का अध्ययन अध्ययन करना है।

प्रस्तुत भाोध का महत्व :—

किसी भी राश्ट्र निर्माण के लिए ि ाक्षा का सबसे अधिक महत्व है। भारत में ि ाक्षा का महत्व इसलिए अधिक बढ़ जाता है क्योंकि यहाँ की जनसंख्या अधिक है एवं यहाँ ि ाक्षा का ढांचा मिश्रित है। यहाँ ि ाक्षा सरकारी विद्यालयों के माध्यम से भी दी जाती हैं एवं निजी विद्यालयों के माध्यम से भी। जहां एक ओर निजी विद्यालय विद्यार्थियों पर ि ाक्षा का अत्यधिक दबाव डाल रहे हैं वहीं दूसरी ओर सरकारी विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं एवं ि ाक्षकों का भी अभाव है।

वर्तमान संदर्भ में माध्यमिक ि ाक्षा अधिक से अधिक प्रतियोगी होती जा रही है। माध्यमिक शिक्षा ऐसा आधार है जिस पर देश तथा इसके प्रत्येक नागरिक का विकास निर्भर करता है। हाल के वर्षों में भारत ने माध्यमिक शिक्षा में छात्रों की संख्या बरकरार रखने, उनकी नियमित उपस्थिति दर और साक्षरता के प्रसार के संदर्भ में काफी प्रगति की है। जहाँ भारत की उन्नत शिक्षा पद्धति को भारत देश के आर्थिक विकास का मुख्य योगदानकर्ता तत्व माना जाता है, वहीं भारत में माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता फिलहाल एक चिंता का विषय है।

प्रस्तुत भाोध झारखंड राज्य से संबंधित है। इसमें झारखंड राज्य के रांची शहर के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार, शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा एवं विद्यालय वातावरण पर अध्ययन किया जाएगा।

विद्यमान साहित्य का पुनरीक्षण :—

1. **Amarnath (1980)** [2] ने सरकार के संगठनात्मक माहौल की तुलना करने के लिए एक अध्ययन किया और निजी तौर पर जलंधर जिले के 32 उच्च माध्यमिक स्कूलों का प्रबंधन किया। प्राप्त परिणामों से पता चला कि संगठनात्मक वातावरण और छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच कोई सकारात्मक संबंध नहीं था। सरकार और निजी तौर पर प्रबंधित स्कूल अपने संगठनात्मक वातावरण में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं थे।

2.Shyder (1989) [11] ने एक कला महाविद्यालय के संकाय में प्रेरणा और कार्य संतुष्टि पर एक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य कला महाविद्यालयों में संकाय की कार्य प्रेरणा और संतुष्टि का आकलन करना था। फैकल्टी के काम की संतुष्टि को चुने गए नौ जनसांख्यिकीय चर में से आठ के साथ सहसंबद्ध पाया गया। प्रेरणा किसी भी जनसांख्यिकीय चर के साथ सहसंबद्ध नहीं है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने मध्यम स्तर की नौकरी से संतुष्टि और प्रेरणा का संकेत दिया।

3. Mittal (1989) [9] ने स्कूल की संगठनात्मक वातावरण के साथ काम करने और इसके संबंध के लिए शिक्षक प्रेरणा का एक खोजपूर्ण अध्ययन किया। अध्ययन विभिन्न सेटिंग और स्तरों में काम करने के लिए शिक्षक की प्रेरणा की घटना और संबंधित स्कूलों के संगठनात्मक वातावरण के साथ इसकी अन्योन्याश्रय की पड़ताल करता है। 10 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के 100 शिक्षकों ने अध्ययन के नमूने का गठन किया। यह पाया गया किः निजी स्कूलों में काम करने वाले शिक्षकों को सरकार द्वारा प्रबंधित स्कूल में काम करने वाले उनके काउंटर पार्ट्स की तुलना में काम करने के लिए काफी प्रेरित किया गया था और शिक्षकों के काम करने के लिए शिक्षकों के सेक्स का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नही था।

4.Ahmed and Vyas (1987) [3] ने छात्रों की रचनात्मकता पर स्कूल की वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करने और सरकारी और निजी स्कूलों के मामले में इस तरह के प्रभाव की तुलना करने का प्रयास किया। स्कूल संगठनात्मक वातावरण को मापने के लिए, ''शर्मा (1973) द्वारा स्कूल संगठनात्मक वातावरण विवरण प्रश्नावली और रचनात्मकता का आकलन करने के लिए, **Passi** (1987) मौखिक परीक्षण रचनात्मकता का उपयोग किया गया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला है किः क) स्वायत्त वातावरण रचनात्मकता स्कोर को प्रभावित करती है। छात्रों को खुली वातावरण की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। ख) स्वायत्त वातावरण से संबंधित निजी और सरकारी स्कूलों के छात्रों के रचनात्मकता स्कोर खुले वातावरण निजी स्कूलों के छात्रों की औसत रचनात्मकता स्कोर की तुलना में काफी अधिक पाए गए। ब) निजी और सरकारी छात्राओं के खुले स्कूल और स्वायत्त वातावरण उनके छात्राओं के रचनात्मकता स्कोर के मामले में भिन्न नहीं पाए गए बंद, नियंत्रित, पितृ

5. Ahluwalia and Ahluwalia (1990) [1] ने दिल्ली के तीन प्रकार के स्कूलों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में चार पब्लिक स्कूल, चार केंद्रीय विद्यालय और छह सरकारी स्कूल शामिल था। इस अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला है कि केंद्रीय विद्यालयों में पैतृक वातावरण लोकप्रिय था। जबकि सरकारी स्कूलों में एक सरकारी स्कूल को छोड़कर सभी में बंद वातावरण था। इसके अलावा, यह पता चला कि दो सार्वजनिक स्कूलों में खुला वातावरण था और दो सार्वजनिक स्कूलों में वातावरण नियंत्रित था। इस प्रकार, विभिन्न स्कूलों की संगठनात्मक वातावरण एक दूसरे से अलग था।

6. Chakroborti (1990) [6] ने प्रधानाचार्यों के व्यवहार और स्कूल के संगठनात्मक वातावरण के बीच संबंधों का पता लगाया और उनके बीच प्रमुख महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध पाया।

7. Venkatapathy (1990) [12] ने शीर्ष निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों के तुलनात्मक विश्लेषण में निश्चित नेतृत्व शैली के उपयोग द्वारा बनाई गई संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन किया। निजी क्षेत्र के कार्यकारी ने शीर्ष नेतृत्व को सार्वजनिक क्षेत्र के अधिकारियों की तुलना में अपने अधीनस्थों की ओर अधिक महत्वपूर्ण और कम विकासात्मक माना। सार्वजनिक क्षेत्र के अधिकारियों ने वातावरण को आत्म–विश्वास और अन्योन्याश्रितता के उच्च स्तर को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल माना। निजी क्षेत्र के अधिकारियों ने वातावरण को अक्षमता, निर्भरता और असंतोष को बढ़ावा देने के रूप में माना।

8. Baruah (2004) [4] ने कामरूप जिले के सरकारी और निजी स्कूलों के संगठनात्मक वातावरण पर एक तुलनात्मक अध्ययन किया। यह पाया गया कि निजी तौर पर संचालित स्कूलों की संगठनात्मक वातावरण सरकारी स्कूलों से बेहतर है।

9. **Recepoglu, Kilinc and Cepni (2011)**[10] ने स्कूल प्रिंसिपल की हास्य शैली के अनुसार शिक्षकों के प्रेरणा स्तर की जांच की। परिणामों ने संकेत दिया कि 141 शिक्षकों ने दावा किया कि स्कूल के प्रिंसिपल की निर्माता शैली हास्य की थी। दूसरी ओर, 70 शिक्षकों ने खुलासा किया कि स्कूल के प्रिंसिपल की गैर–हास्य शैली थी। इसके अतिरिक्त, यह निष्कर्ष निकाला गया कि गैर–विनोदी प्रिंसिपल के साथ काम करने वाले शिक्षकों का प्रेरणा स्तर उन प्रिंसिपलों के साथ काम करने वालों की तुलना में कम था, जिनके पास निर्माता, प्रशंसाकर्ता या प्रजननकर्ता हास्य शैली थी। रेसेपोग्लू, किल्किन और सेफनी (2011) पाल और दासगुप्ता (2012) ने कार्य प्रेरणा के स्रोतों और संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार के बीच संबंधों की जांच की। व्यापक उद्देश्य निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के भारतीय संगठनों में संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार की प्रकृति और उसके आयामों की जांच करना था। परिणामों ने संकेत दिया कि संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार सार्वजनिक क्षेत्र के श्रमिकों की तुलना में निजी क्षेत्र के श्रमिकों में अधिक था। दो क्षेत्रों के श्रमिकों के संबंध में कार्य प्रेरणा ने तीन स्रोतों पर महत्वपूर्ण होने के साथ ''टी'' अंतर के साथ एक मिश्रित तस्वीर प्रस्तुत की और अन्य दो पर महत्वहीन। कार्य प्रेरणा के साथ संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार का संबंध निजी क्षेत्र के संगठनों के बीच महत्वपूर्ण पाया गया जबकि समान संबंध सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों में महत्वहीन था।

10. Holeppanawar (2017) [7] ने संबंध अध्ययन किया और शिक्षकों के मनोबल और संगठनात्मक स्वास्थ्य के साथ नेतृत्व के व्यवहार का महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध पाया।

11. Kakati (2017) [8] ने कॉलेज प्राचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार और गौहाटी विश्वविद्यालय से संबद्ध प्रांतीयकृत सामान्य डिग्री कॉलेजों के कॉलेज वातावरण के संबंध में एक अध्ययन किया। अध्ययन

के परिणाम में विभिन्न कॉलेजों के प्राचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार में अंतर पाया गया। कॉलेज के प्राचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार और कॉलेज के वातावरण के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध पाया जाता है। इसलिए, प्राचार्य के प्रशासनिक व्यवहार का कॉलेजों के वातावरण पर प्रभाव पड़ता है, यदि प्राचार्य का प्रशासनिक व्यवहार कॉलेज के वातावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, तो इससे अधिक है। यह भी पाया गया कि कॉलेज की वातावरण का प्रिंसिपलों के प्रशासनिक व्यवहार के साथ संबंध है।

12. Barpujari (2019) [5] ने प्रशासनिक व्यवहार और संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन करने का प्रयास किया और माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्यों के संगठनात्मक वातावरण के साथ प्रशासनिक व्यवहार के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया।

समस्या का कथनः—

''माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा एवं विद्यालय वातावरण का अध्ययन''

विशिष्ट शब्दों का कार्यात्मक परिभाषीकरणः—

1. **प्रधानाचार्यों का प्रशासनिक व्यवहार** — प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रधानाचार्यों का प्रशासनिक व्यवहार का अभिप्राय विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार को मापने के लिये डॉक्टर हसीन ताज द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत उपकरण प्रशासनिक व्यवहार का पैमाना में प्राप्त किए गए अंकों के रूप में माना जायेगा।
2. **शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा** — प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा का अभिप्राय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा को मापने के लिये डॉक्टर श्रीवास्तव द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत उपकरण **कर्मचारियों की अभिप्रेरणा अनुसूची 1998** में प्राप्त किए गए अंकों के रूप में माना जायेगा।
3. **विद्यालय वातावरण** — प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यालय वातावरण का अभिप्राय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा को मापने के लिये **डॉक्टर मोतीलाल शर्मा** द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत

उपकरण **विद्यालय संगठनात्मक वातावरण वर्णनात्मक प्रश्नावली** में प्राप्त किए गए अंकों के रूप में माना जायेगा।

4. **माध्यमिक विद्यालय** – प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों का तात्पर्य रांची शहर के माध्यमिक विद्यालयों से है जहां बारहवीं कक्षा तक की शिक्षा दी जाती है।

शोध के उद्देश्य :–

1. माध्यामिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.1 माध्यामिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार का विभिन्न आयामों (योजना आयाम, आयोजन आयाम, संप्रेषण आयाम एवं निर्णय लेना आयाम) का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. माध्यामिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.1 माध्यामिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा का विभिन्न आयामों (व्यक्तिगत विकास आयाम, उपलब्धि आयाम, आत्म–संयम आयाम, वित्तीय लाभ आयाम, गैर वित्तीय लाभ आयाम एवं आत्म–बोध आयाम) का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. माध्यामिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विघालयों में विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3.1 माध्यामिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विघालयों में विद्यालयी वातावरण का विभिन्न आयामों (मुक्ति आयाम, अलगाव की भावना आयाम, संघभावना आयाम, आत्मीयता आयाम, मनोदैहिक बाधा आयाम, नियंत्रण आयाम, कार्य पर जोर आयाम, एवं मानवतावादी जोर आयाम) का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के उच्च एवं निम्न प्रशासनिक व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के उच्च एवं निम्न प्रशासनिक व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के उच्च एवं निम्न प्रशासनिक व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

7. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के उच्च एवं निम्न प्रशासनिक व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

8. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार एवं शिक्षकों के कार्य अभिप्रेरणा का सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

9. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार एवं शिक्षकों के कार्य अभिप्रेरणा का सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

10. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार एवं शिक्षकों के कार्य अभिप्रेरणा का सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

11. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार एवं विद्यालय वातावरण का सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

12. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार एवं विद्यालय वातावरण का सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

13. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार एवं विद्यालय वातावरण का सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

14. माध्यमिक विद्यालयों में विद्यालयी वातावरण एवं शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा में सहसंबंध ज्ञात करना।

15. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में विद्यालयी वातावरण एवं शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा में सहसंबंध ज्ञात करना।

16. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में विद्यालयी वातावरण एवं शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

शोध की परिकल्पनाएंः—

1. माध्यामिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

1.1 माध्यामिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार का विभिन्न आयामों (योजना आयाम, आयोजन आयाम, संप्रेषण आयाम एवं निर्णय लेना आयाम) में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

2. माध्यामिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

2.1 माध्यामिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा का विभिन्न आयामों (व्यक्तिगत विकास आयाम, उपलब्धि आयाम, आत्म–संयम आयाम, वित्तीय लाभ आयाम, गैर वित्तीय लाभ आयाम एवं आत्म–बोध आयाम) में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

3. माध्यामिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विघालयों में विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

3.1 माध्यामिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विघालयों में विद्यालयी वातावरण का विभिन्न आयामों (मुक्ति आयाम, अलगाव की भावना आयाम, संघभावना आयाम, आत्मीयता आयाम, मनोदैहिक बाधा आयाम, नियंत्रण आयाम, कार्य पर जोर आयाम, एवं मानवतावादी जोर आयाम) में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

4. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के उच्च एवं निम्न प्रशासनिक व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के उच्च एवं निम्न प्रशासनिक व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के उच्च एवं निम्न प्रशासनिक व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

7. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के उच्च एवं निम्न प्रशासनिक व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

8. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार एवं शिक्षकों के कार्य अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

9. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार एवं शिक्षकों के कार्य अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

10. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार एवं शिक्षकों के कार्य अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

11. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार एवं विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक सह–संबंध नहीं हैं।

12. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार एवं विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक सह–संबंध नहीं हैं।

13. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार एवं विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

14. माध्यमिक विद्यालयों में विद्यालयी वातावरण एवं शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा में कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

15. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में विद्यालयी वातावरण एवं शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा में कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

16. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में विद्यालयी वातावरण एवं शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा में कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

शोध प्रविधिः–

प्रस्तुत भाोध की प्रकृति मुख्यतः एक विवरणात्मक भाोध है। ऐसा भाोध मुख्य रूप से किसी भी समस्या के कारणों एवं निवारणों की व्याख्या करने एवं उनमें संबंध स्थापित करने से सम्बंधित होता है। इस प्रकार के भाोध में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया जा सकता है। प्रस्तावित भाोध प्रविधि के अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर नीचे प्रका ा डाला गया है।

प्रतिदर्श :–

प्रस्तुत भाोध झारखंड राज्य से संबंधित है। इसमें झारखंड राज्य के रांची शहर के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार, शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा एवं विद्यालय वातावरण पर सर्वेक्षण किया जाएगा।

न्याद ि का चयन यादृच्छिकी – न्याद ि के आधार पर किया जायेगा। न्याद ि के रूप में रांची शहर में स्थित सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों को यादृच्छिकी विधि द्वारा चयनित किया जायेगा। सर्व प्रथम रांची शहर के 50 सरकारी एवं 50 निजी माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिकी आधार पर किया जायेगा। प्रत्येक चयनित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों का चयन प्रतिद ि के रूप में किया जायेगा।

शोध के उपकरण :–

1. विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार को मापने के लिये **डॉक्टर हसीन ताज** द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत उपकरण **प्रशासनिक व्यवहार का पैमाना 1998** का प्रयोग किया जायेगा।
2. विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की **कार्य अभिप्रेरणा** को मापने के लिये **डॉक्टर श्रीवास्तव** द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत उपकरण **कर्मचारियों की अभिप्रेरणा अनुसूची 1998** का प्रयोग किया जायेगा।
3. विद्यालयों में **विद्यालयी वातावरण** को मापने के लिये **डॉक्टर मोतीलाल शर्मा** द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत उपकरण **विद्यालय संगठनात्मक वातावरण वर्णनात्मक प्रश्नावली** का प्रयोग किया जायेगा।

प्रयुक्त सांख्यिकी तकनीक :–

आंकड़ों का संकलन

प्रस्तुत भोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया जाएगा। प्राथमिक आंकड़े मानकीकृत उपकरणों के माध्यम से एकत्रित किए जाएंगे एवं द्वितीयक आंकड़े सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं, पत्र–पत्रिका, संबंधित पुस्तकों भोध संकलनों से एकत्रित किए जाएंगे।

आंकड़ों के विशलेशण की प्रस्तावित विधियाँ :–

भोध में आंकड़ों के वि लेशण के लिए मुख्य रूप से माध्य, प्रति ात, टी टेस्ट एवं सहसंबंध सांख्यिकीय तकनीकों आदि का प्रयोग किया जाएगा।

शोध का परिसीमन :–

1. शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत भोध झारखंड राज्य के रांची शहर के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में किया जायेगा।
2. शोध रांची शहर के 50 सरकारी एवं 50 निजी माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों तक ही सीमित किया जाएगा।
3. शोध माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार, शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा एवं विद्यालय वातावरण तक ही सीमित किया जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

[1] Ahluwalia, I.K., & Ahluwalia, T.P. (1990). A comparative study of organizational climate in schools. *Indian Journal of Psychology and Education and Education,2*(2),35-39.

[2] Amarnath, M. (1980). *Comparative study of the organizational climate of government and privately managed higher secondary schools in Jallunder District*. Unpublished doctoral dissertation, Pan University. In M.B. Buch (ed.), Third Survey of Research in Education, NCERT.

[3] Ahmed, A., & Vyas. (1987). School climate and creativity. *Journal of Education and Psychology,* XXXXIV (4).

[4] Baruah, S. (2004). *Organisational climate of government and privately managed high schools of Kamrup District: A comparative study*. Unpublished doctoral thesis, Guwahati University, Guwahati.

[5] Barpujari, P. (2019). *A study of the administrative behavior of secondary school principals and its relation with organizational climate.* Doctoral thesis, Guwahati University, Guwahati. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/267696 .

[6] Chakraborti, M. (1990). *A study of organizational climate of secondary schools in West Bengal and its correlation with other relevant variables.* Unpublished doctoral thesis, University of Calcutta., West Bengal.

[7] Holeppanawar Ratnam. M. (2017). *A study of leadership behavior of heads in relation to teachers' morale and organizational health of secondary schools*. Doctoral thesis, Karnatak University. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/235812 .

[8] Kakati, K. (2017). *A study on the administrative behaviour of college principals and its relation to college climate.* Unpublished doctoral thesis, Guwahati University, Assam.

[9] Mittal, J. P. (1989). *An Exploratory study of Teachers Motivation to work and its relationship with the organizational climate of the school*. Fifth Survey of Educational Research, 1988-92, 1458.

[10] Recepoglu, E., Kilinc, A.C., & Cepni, O. (2011). Examining teachers' motivation level according to school principals' humor styles. *Educational Research and Reviews, 6*(17), 928-934.

[11] Shyder, M. H. (1989). Motivation and Work Satisfaction in a Liberal Arts College faculty. *Dissertation Abstracts International, University Microfilm International, 50*(4), 848-A.

[12] Venkatapathy, R. (1990). Perception of top management leadership styles and climate: *A study of public and private executives, Indian Journal of IndustrialRelations,25* (3), 303-311.